पुष्कर में ब्रह्मलोक कॉरिडोर 05

मुस्लिम देश ने हिजाब, बुर्के पर लगाई रोक 07

भारतीय महिलाओं के अपमान पर बीबीसी को नोटिस 12

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक

₹10

पाथेय कण

आषाढ़ कृ.10, वि. 2081, युगाब्द 5126, 01 जुलाई, 2024

39 वर्षों से निरंतर

Nālandā UNIVERSITY

विश्व के प्रमुख ज्ञान केन्द्र के रूप में भारत की पहचान स्थापित करने का प्रयास

नवनिर्मित नालंदा विश्वविद्यालय का मुख्य द्वार एवं परिसर

www.patheykan.com

patheykan@gmail.com @patheykanofficial @patheykanofficial @patheyofficial1 @patheykan

विश्व के प्रमुख ज्ञान केन्द्र के रूप में भारत की पहचान स्थापित करने का प्रयास

पश्चिम के कैंब्रिज, हार्वर्ड जैसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों से भी सैकड़ों वर्ष पूर्व विश्व के छात्रों में ज्ञान ज्योति जगाने वाले नालंदा विश्वविद्यालय (बौद्ध महाविहार) के खंडहरों के नजदीक ही नवनिर्मित नालंदा विश्वविद्यालय का उद्घाटन गत 19 जून को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किए जाते समय विश्व के 17 देशों के राजदूत उपस्थित थे। विश्वविद्यालय के निर्माण में इन सभी देशों की भी भागीदारी रही है।

एक हजार 749 करोड़ रुपयों की लागत से बने इस परिसर के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि केन्द्र सरकार, अनुसंधान उन्मुख उच्च शिक्षा की दिशा में काम कर रही है। उनका मिशन दुनिया के सबसे प्रमुख ज्ञान केन्द्र के रूप में भारत की पहचान स्थापित करना है। नालंदा विश्वविद्यालय की पुनर्स्थापना भारत के स्वर्णिम युग की शुरुआत कही जा सकती है।

उन्होंने कहा, ***''नालंदा केवल नाम नहीं, एक पहचान है। नालंदा एक मूल्य, गौरव और गाथा है। नालंदा केवल भारत के अतीत का ही पुनर्जागरण नहीं है, इसमें एशिया के कितने ही देशों की विरासत जुड़ी हुई है।*** एक विश्वविद्यालय के परिसर के उद्घाटन में इतने देशों का उपस्थित होना, अपने आप में महत्वपूर्ण है।''

प्रधानमंत्री ने कहा, ''जब शिक्षा का विकास होता है तो अर्थव्यवस्था और संस्कृति की जड़ें भी मजबूत होती हैं। हम विकसित देशों को देखें तो पाएंगे कि वे आर्थिक व सांस्कृतिक लीडर तब बने जब शैक्षिक क्षेत्र में आगे बढ़े।''

मोदी ने कहा ,''आज दुनिया भर के छात्र उन देशों में जाकर पढ़ना चाहते हैं। कभी ऐसी स्थिति हमारे यहां नालंदा और विक्रमशिला जैसे स्थानों में हुआ करती थी। इसलिए यह केवल संयोग नहीं है कि जब भारत शिक्षा में आगे था तब उसकी आर्थिक सामर्थ्य भी नई ऊँचाई पर थी।'' प्रधानमंत्री ने कहा कि यह 'किसी भी राज्य के विकास के लिए बुनियादी 'रोड मैप' है, इसलिए 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य पर काम कर रहा भारत, शिक्षा के क्षेत्र का कायाकल्प कर रहा है।''

''नई खोज को बढ़ावा देने के लिए भारत ने एक दशक पहले

प्राचीन नालंदा परिसर में प्रधानमंत्री

'स्टार्टअप इंडिया' मिशन की शुरुआत की थी और देश में एक समय कुछ ही स्टार्टअप थे, लेकिन आज भारत में 1 लाख 30 हजार से ज्यादा स्टार्टअप हैं।'' उन्होंने कहा कि पहले की तुलना में आज भारत से रिकॉर्ड संख्या में पेटेंट फाइल किए जा रहे हैं और शोध पत्र प्रकाशित हो रहे हैं।

बताते हैं कि ई.सन 413-427 में सम्राट कुमार गुप्त प्रथम द्वारा स्थापित 'बौद्ध महाविहार' के नाम से प्रसिद्ध इस विश्वविद्यालय में विश्व के अनेक देशों के छात्र अध्ययन करते थे। प्रवेश के इच्छुक मात्र 20 प्रतिशत छात्रों को ही प्रवेश मिल पाता था। प्रवेश से पूर्व कठिन परीक्षा ली जाती थी। विश्वविद्यालय में शिक्षा, निवास, भोजन आदि सभी नि:शुल्क थे।

यहां के महान शिक्षकों में नागार्जुन, बुद्धपालिता, शांतरक्षिता, आर्यदेव, शीलभद्र व आर्यभट्ट के नाम शामिल हैं।

मुख्य रूप से बौद्ध धर्म की शिक्षा के लिए बने इस शिक्षण संस्थान में वैदिक और जैन मतों से संबंधित अध्ययन भी कराए जाने की बात कही जाती है। वेद, विज्ञान, खगोल, सांख्य, वास्तुकला, शिल्प, व्याकरण, दर्शन, चिकित्सा, ज्योतिष, योगशास्त्र आदि अध्ययन के विषय थे।

प्रसिद्ध तिब्बती धर्मगुरु दलाई लामा ने एक बार कहा था, ''हम लोगों को जो भी बौद्ध ज्ञान मिला, वह सब नालंदा से ही आया था।'' ■

पाथेय कण
आषाढ़ कृ.10से शु.9 तक
विक्रम संवत 2081
युगाब्द 5126
01-15 जुलाई, 2024
वर्ष : 40 अंक : 7

सम्पादक : रामस्वरूप अग्रवाल
सह सम्पादक : मनोज गर्ग
प्रबंध सम्पादक : ओमप्रकाश
सह प्रबंध सम्पादक : श्याम सिंह
अक्षर संयोजन : कौशल रावत

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राजस्थान)
E-mail : patheykan@gmail.com

पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक: माणकचन्द

सहयोग राशि
एक वर्ष 150/-
पन्द्रह वर्ष 1500/-

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर प्रात: 10 से सायं 5 बजे तक संपर्क करें- 79765 82011 इसके अतिरिक्त समय में वाट्सएप व मैसज करें अथवा ईमेल पर जानकारी दें। अति आवश्यक होने पर मो.न. 9166983789 पर मोहित जी से संपर्क कर सकते हैं।

खण्डहरों से साकार होता ज्ञानपुंज और मुस्लिम आक्रांताओं की ढाल बनते वामपंथी इतिहासकार

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि विश्व का पहला आवासीय विश्वविद्यालय जहां विश्व के अनेक देशों से आए 10 हजार से ज्यादा विद्यार्थी और लगभग 2 हजार अध्यापक ज्ञान साधना में रत रहे हों और जो लगभग 800 वर्षों तक ज्ञान का प्रकाश फैलाता रहा हो, सदियों तक जमीन में दबा रहा? इस विश्वविद्यालय के छात्र रहे प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग और इत्सिंग के संस्मरणों का जब फ्रांसीसी भाषा में अनुवाद हुआ तो विश्व को इस ज्ञान केन्द्र नालंदा की जानकारी हुई।

300 बड़े कमरे, 7 बड़े कक्ष और अध्ययन के लिए 90 लाख पुस्तकों की विशाल ज्ञान संपदा को समेटे 9 मंजिला पुस्तकालय-कितना विशाल और भव्य रहा होगा? खुदाई में विश्वविद्यालय के अवशेष एक लाख 50 हजार वर्ग फीट में फैले मिले हैं। एक अनुमान के अनुसार यह तो विशाल परिसर का केवल 10 प्रतिशत हिस्सा ही माना जा रहा है।

इन अवशेषों में से प्रादुर्भाव हुआ है एक आधुनिक-विशाल नवीन नालंदा विश्वविद्यालय का, जो उक्त खंडहरों के नजदीक ही बनाया गया है। गत 19 जून को विश्वविद्यालय के इस नवीन परिसर का उद्घाटन करते समय भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ठीक ही कहा *''नालंदा इस सत्य का उद्घोष है कि आग की लपटों में पुस्तकें भले जल जाएं, लेकिन वे ज्ञान को नहीं मिटा सकतीं।''*

ये आग की लपटें तुर्क-अफगान आक्रांता बख्तियार खिलजी ने सन 1199 में नालंदा विश्वविद्यालय का विध्वंस करने के बाद पुस्तकालय में लगाई थी। ज्ञान के दुश्मन एक क्रूर आक्रांता ने इस ज्ञान-विज्ञान की ज्योति को हमेशा के लिए बुझाने का प्रयास किया।

वामपंथी इतिहासकार कैसे विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं के पक्ष में नैरेटिव बनाते हुए भारत के इतिहास को विकृत करते रहे हैं, इसका एक अच्छा उदाहरण नालंदा विश्वविद्यालय है। वामपंथी इतिहासकार डीएन झा ने लिखा है कि नालंदा विश्वविद्यालय में आग हिंदू कट्टरपंथियों ने लगाई क्योंकि वहां से बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार हो रहा था। इस आग से नालंदा विश्वविद्यालय बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुआ। खिलजी ने तो नालंदा के पास एक अन्य 'विहार'(बौद्ध ज्ञान केन्द्र व बौद्ध भिक्षुओं का निवास स्थान) को ध्वस्त किया था। वह कभी नालंदा गया ही नहीं।

प्रसिद्ध लेखक अरुण शौरी ने डीएन झा की उपरोक्त अवधारणा का खंडन अपनी पुस्तक 'एमिनेंट हिस्टोरियंस : देयर टेक्नोलॉजी, देयर लाइन, देयर-फ्रॉड्स' में किया है। वे नालंदा-विध्वंस के समकालीन रहे मौलाना मिन्हाज-उद्-दीन सिराज की पुस्तक 'तबकात-ए-नासिरी' का उल्लेख करते हैं जिसमें स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि बख्तियार खिलजी 200 घुड़सवारों के साथ आया, नालंदा पर हमला किया और स्थानीय ब्राह्मणों (भिक्षुओं) के सिर मुंडवाकर उन्हें मार डाला। इस पुस्तक में यह भी लिखा है कि ''मुहम्मद-ए-बख्तियार लूट के बड़े माल के साथ लौटा और सुल्तान कुतुब-उद्-दीन ऐबक के दरबार में आया, जहां उसे बहुत सम्मान और गौरव प्राप्त हुआ।'' उल्लेखनीय है कि बाबा साहेब भीमराव रामजी अंबेडकर भी नालंदा को खिलजी द्वारा नष्ट किया जाना मानते हैं। इतिहासकार विंसेट स्मिथ ने समकालीन दस्तावेजों को उद्धृत करते हुए बताया है कि कैसे बख्तियार खिलजी ने नालंदा को जलाकर नष्ट कर दिया था और कैसे उसने वहां के सभी ब्राह्मणों के सिर मुंडवाकर उन्हें मार डाला था।

यह भी कहा जाता है कि इस क्रूर तुर्क बख्तियार खिलजी ने विश्वविद्यालय के आसपास रह रहे बौद्धों, अनेक धर्माचार्यों और भिक्षुओं का कत्लेआम किया, और यह भी कि, खिलजी ने बिहार में चुन-चुन कर सभी बौद्ध मठों को नष्ट किया था तथा लोगों को इस्लाम कबूल करने को मजबूर किया।

जब खिलजी ने विश्वविद्यालय पर आक्रमण किया उस समय उसके पास 200 घुड़सवार सैनिक ही थे जबकि विश्वविद्यालय में दस हजार युवा विद्यार्थी एवं डेढ़ दो-हजार प्राध्यापक थे। उन्होंने खिलजी का प्रतिरोध क्यों नहीं किया? निहत्थे और अहिंसक बौद्ध भिक्षुओं ने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि ज्ञान और शास्त्रों की रक्षा के लिए शस्त्रों की भी आवश्यकता होती है।

– रामस्वरूप

15 दिन की यात्रा होगी मात्र 4–5 दिन में

चारधाम यात्रा के लिए बिछाई जा रही हैं रेलवे लाइन

भारत के चार कोनों में स्थित चार धाम (बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम् और द्वारिका) के साथ ही उत्तराखंड स्थित चार धामों की यात्रा का अत्यधिक धार्मिक महत्व माना गया है।

उत्तराखण्ड के ये चार धाम हैं केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री। पहाड़ों में ऊँचाई पर स्थित इन धामों तक पहुंचने में 15 दिनों का समय लगना सामान्य बात है परन्तु भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजनानुसार इन्हें रेल मार्ग से जोड़ने का कार्य तीव्र गति से चल रहा है। योजना पूरी होने पर 15 दिन की यात्रा 4–5 दिनों में पूरी हो सकेगी। ऋषिकेश–कर्णप्रयाग रेलवे ट्रैक पर 100 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ेंगी ट्रेन।

चारधाम रेल परियोजना

उत्तराखण्ड चारधाम यात्रा को सुगम करने के लिए ऋषिकेश से कर्णप्रयाग तक 125 किमी का रेल मार्ग 16 हजार 216 करोड़ रुपए की लागत से तैयार हो रहा है। इसमें से 105 किमी की रेल लाइन सुरंग से होकर गुजरेगी। इस लाइन पर कुल 12 स्टेशन बनाए जा रहे हैं। ये 12 स्टेशन हैं–ऋषिकेश, मुनि की रेती, शिवपुरी, मंजिलगांव, साकनी, देवप्रयाग, कीर्तिनगर, श्रीनगर, धारी देवी, रुद्रप्रयाग, घोलतीर और कर्ण प्रयाग।

इस परियोजना को विस्तार देकर बद्रीनाथ और केदारनाथ तक बढ़ाया जाएगा। ऋषिकेश से कर्णप्रयाग के बीच वाले मार्ग पर 17 सुरंगों का निर्माण किया गया है। ऋषिकेश से 48 किलोमीटर की दूरी पर 15 किलोमीटर लंबी सुरंग बनी है। यह देश की सबसे लंबी रेलवे सुरंग है। ऋषिकेश से कर्णप्रयाग तक रेलमार्ग 2025 तक पूरा होने की संभावना है।

रेल मंत्रालय के अनुसार इन चारों धामों की उंचाई समुद्र तल से अलग–अलग है। ऐसे में रेलवे को यहां इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने में काफी मशक्कत करनी पड़ रही है। यमुना के उद्गम स्थल यमुनोत्री की उंचाई समुद्र तल से 3293 मीटर है तथा गंगोत्री 3408 मीटर,केदारनाथ 3583 मीटर व बद्रीनाथ 3133 मीटर की उंचाई पर स्थित है।

तीर्थयात्रा में यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इतनी दक्षता के साथ सुरंगों का निर्माण करवाया जा रहा है कि इन पर भारी बारिश व भूकम्प का भी प्रभाव देखने को नहीं मिलेगा।

चारों धामों के कपाट खुलते ही शुरू होती है यात्रा

हर साल केदारनाथ धाम के कपाट भाई दूज के दिन छह महीने के लिए बंद कर दिए जाते हैं। इसके बाद अक्षय तृतीया पर खुलते हैं। इन छह महीनों में बाबा केदार की पूजा ऊखी मठ स्थित ओंकारेश्वर मंदिर में होती है। वहीं बद्रीनाथ धाम के कपाट आम तौर पर केदारनाथ धाम के कपाट खुलने के दो दिनों बाद खुलते हैं। इस वर्ष 10 मई को केदारनाथ व 12 मई को बद्रीनाथ धाम के कपाट खुले।

चार धाम रेल मार्ग

प्रत्येक धाम के लिए अलग से चार ट्रेनें चलाई जाएंगी। हालांकि दूरी,जलवायु व ऊँचाई ट्रेन यात्रा के लिए चुनौतियां रहेंगी।

पहला : ऋषिकेश–कर्णप्रयाग 125 किमी रेल मार्ग, जिसको 2025 में पर्यटकों के लिए खोल दिया जाएगा।

दूसरा : कर्णप्रयाग–साईकोट, सोनप्रयाग केदारनाथ रेल मार्ग। यह 99 किलोमीटर लंबा रेल मार्ग कर्णप्रयाग से शुरू हो कर सोनप्रयाग तक है। यहां से केदारनाथ की दूरी 13 किलोमीटर है।

तीसरा : साईकोट–जोशीमठ–बद्रीनाथ रेल मार्ग–75 किलोमीटर लंबा यह रेल मार्ग साईकोट से शुरू हो कर जोशीमठ तक है। यहां से बद्रीनाथ की दूरी 46 किलोमीटर है।

चौथा : डोइवाला–देहरादून–उत्तरकाशी–मनेरी–गंगोत्री रेल मार्ग–131 किलोमीटर लंबा यह रेलमार्ग देहरादून के पास स्थित डोईवाला से शुरू हो कर गंगोत्री के पास मनेरी, उत्तरकाशी तक पहुंचाता है।

–उत्तरकाशी–पालर–यमुनोत्री रेल मार्ग–22 किलोमीटर का यह रेल मार्ग मनेरी गंगोत्री से शुरू होकर यमुनोत्री के पास पालर तक रहेगा।

परियोजना का सामरिक महत्व

यह परियोजना पूरी होने के बाद भारत–चीन सीमा रेल मार्ग द्वारा देश के बाकी हिस्सों से नजदीक हो जाएगी। इससे सीमा के पास स्थित सामरिक सैन्य ठिकानों तक सुरक्षित व त्वरित सार्वजनिक परिवहन साधन मिलने से दिल्ली से यहां तक कम समय में पहुंचा जा सकेगा। (हेमलता)

ब्रह्मलोक कॉरिडोर : तीर्थराज पुष्कर को फिर मिलेगी आध्यात्मिक पहचान

जगतपिता ब्रह्माजी की तपोस्थली पुष्कर (अजमेर) को सांस्कृतिक केंद्र के रूप में पुनर्जीवित करने की तैयारी है। इसके आध्यात्मिक महत्व को संरक्षित करने के लिए दिव्य पुष्कर के रूप में यहाँ 'ब्रह्मलोक कॉरिडोर' बनाया जा रहा है। इसका निर्माण उज्जैन के महाकाल लोक की तर्ज पर किया जाएगा। यह प्रदेश का पहला धार्मिक कॉरिडोर होगा।

पुष्कर का इतिहास : पद्मपुराण और वाल्मीकि रामायण के अनुसार पुष्कर को ब्रह्माजी की तपोस्थली भी कहा जाता है। उन्होंने पांच दिन (कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) यहाँ यज्ञ किया था। शास्त्रों के अनुसार, जब वे यहाँ यज्ञ के लिए आए तब वज्रनाभ नामक राक्षस का आतंक था। वह बच्चों को पैदा होते ही मार देता था। ब्रह्माजी ने कमल के पुष्प से प्रहार कर वज्रनाभ का अंत किया। प्रहार के दौरान पुष्प टूट कर तीन स्थानों पर गिरा। इन तीनों ही स्थानों पर जलधारा फूटने से सरोवरों की उत्पत्ति हुई, जो ज्येष्ठ पुष्कर, कनिष्ठ पुष्कर और मध्य पुष्कर कहलाए। ज्येष्ठ पुष्कर में ब्रह्मा जी ने यज्ञ किया। जिससे इस सरोवर को आदि तीर्थ होने का गौरव मिला।

वाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड सर्ग 62 श्लोक 28 में विश्वामित्र जी के भी यहाँ तप करने की बात कही गई है। पांडुलेन गुफा (नासिक) के लेख में, जो ई. सन 125 का माना जाता है, में उषावदता का नाम आता है। यह विख्यात राजा नाहपान का दामाद था और इसने पुष्कर आकर 3 हजार गायों एवं एक गाँव का दान किया था। इन लेखों से पता चलता है कि प्राचीन काल से 'पुष्कर' तीर्थस्थान के रूप में विख्यात था।

वर्तमान स्वरूप : अर्द्ध गोलाकार झील के रूप में दिखाई देता ज्येष्ठ सरोवर 52 घाटों और 500 से अधिक मंदिरों से घिरा हुआ है। इन्हीं में एक है ब्रह्माजी का मंदिर। संगमरमर से निर्मित, चाँदी के सिक्कों से जड़ित, लाल शिखर और हंस की छवि वाले मंदिर में ब्रह्माजी की चतुर्मुखी प्रतिमा गर्भगृह में स्थापित है और सूर्य भगवान की मूर्ति प्रहरी की भाँति खड़ी है। यह मंदिर 14वीं सदी का बताया जाता है। इस मंदिर को भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग द्वारा 4 मार्च, 2005 को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया।

पुष्कर के घाट : तीर्थराज पुष्कर के 52 घाटों के प्रमुख नामों में गऊ घाट, ब्रह्म घाट, वराह घाट, बद्री घाट, सप्तऋषि घाट, तरणी घाट आदि हैं। इनमें से अधिकांश 300 वर्ष पुराने हैं। बहुत से घाटों का निर्माण विभिन्न राजघरानों की ओर से भी करवाया गया है, जैसे ग्वालियर घाट, जोधपुर घाट, कोटा घाट, भरतपुर घाट, जयपुर घाट आदि। श्रद्धालु यहाँ पर अपने पितरों की आत्मा की शांति के लिए पिंडदान भी करने आते हैं।

कॉरिडोर मार्ग : कॉरिडोर में जयपुर घाट से बाईजी मंदिर, नया रंगजी मंदिर, वराह भगवान मंदिर, पुराना रंगजी मंदिर, राम-लक्ष्मण मंदिर, गऊघाट, बड़ा गणेश मंदिर होते हुए ब्रह्मा मंदिर तक के मुख्य मार्ग को शामिल किया गया है।

कॉरिडोर निर्माण में केंद्र और राज्य सरकार की भागीदारी रहेगी। प्रति वर्ष कार्तिक पूर्णिमा पर यहाँ लाखों श्रद्धालु आते हैं। कॉरिडोर बनने के बाद श्रद्धालुओं की संख्या में भारी वृद्धि होने की संभावना है, जिसे राज्य सरकार को आर्थिक लाभ तो होगा ही स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे।

जानकारी हो कि मौलाना आजाद राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, भोपाल के छात्रों ने वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं को देखते हुए तीर्थ नगरी पुष्कर के विकास की योजना तैयार करने में महती भूमिका निभाई है। ■

पुण्यतिथि (27 जुलाई) पर विशेष

मेरे पास डरने का समय नहीं था

भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि पर उनका ही एक प्रेरणादायी संस्मरण यहां दिया जा रहा है-

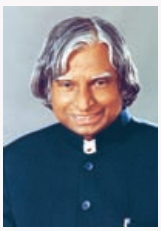

मुझे एक बार की घटना याद आती है। 8 जून, 2006 को मैं पुणे के पास स्थित लोहे गाँव हवाईअड्डे से विंग कमांडर अजय राठौर के साथ सुखोई-3 एमकेआई लड़ाकू विमान उड़ा रहा था। जब मैं विमान से उतरा तो किसी ने कहा '' आप बहुत साहसी राष्ट्रपति हैं। आप 75 वर्ष के हैं, क्या आपको डर नहीं लगा?''

मैंने कहा,''मेरे पास डरने का समय नहीं था, क्योंकि मैं निरंतर वायुयान उड़ाने में, उसे नियंत्रित करने में लगा रहा।'' जिस कार्य को आप पसंद करते हैं, उसमें साहस की जरूरत नहीं होती। अच्छी शिक्षा हमें यही सिखाती है।

चुनाव बाद की हिंसा से कब उबरेगा पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल और राजनीतिक हिंसा देश-दुनिया के लिए कोई नई बात नहीं रह गई है। इस बार भी चुनाव बाद राज्य में हिंसक घटनाएं हुईं। चुनाव नहीं होते तब, आम दिनों में भी यह राज्य राजनीतिक हिंसा की घटनाओं का गवाह बनने को मजबूर सा दिखाई देता है। चुनावों में राजनीतिक झड़पें होना चुनाव आयोग के लिए किसी चुनौती से कम नहीं। इसीलिए यहां सुरक्षा बल तैनात किए जाते हैं। लोकसभा चुनाव-2024 के परिणाम आने के 20 दिन बाद तक क्षेत्र में सुरक्षा बल तैनात थे।

हिंसा के कारण विस्थापित हुए लोगों की वापसी सुनिश्चित करे राज्य सरकार - कोर्ट

लोकसभा चुनाव 2024 के बाद भड़की हिंसा संबंधी याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए कलकत्ता उच्च न्यायालय ने पश्चिम बंगाल सरकार को निर्देश दिया कि वह राज्य में चुनाव के बाद हुई कथित हिंसा के कारण विस्थापित हुए लोगों की घर वापसी सुनिश्चित करे। साथ ही पुलिस को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं कि ऐसी घटनाएं दोबारा न हों। यह भी कहा कि चुनाव बाद हिंसा के आरोपों को देखते हुए राज्य में केंद्रीय बलों की तैनाती जारी रखना आवश्यक है। पश्चिम बंगाल के महाधिवक्ता श्री किशोर दत्ता ने अदालत

को बताया कि चुनाव परिणाम आने के बाद (4 जून से लेकर 18 जून तक) पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) कार्यालय को चुनाव हिंसा से जुड़ी कुल 859 शिकायतें ईमेल से प्राप्त हुईं ।

भाजपा और माकपा समर्थकों पर निशाना

कूचबिहार, उत्तर 24 परगना , दक्षिण 24 परगना तथा जंगलमहल क्षेत्र के झारग्राम सहित राज्य के कई जिलों में चुनाव-पश्चात हिंसा की घटनाएं सामने आईं। उत्तर 24 परगना जिले के बारासात निर्वाचन क्षेत्र के मध्यम ग्राम में भाजपा समर्थकों के कई घरों और पार्टी कार्यालय में हमलावरों ने कथित तौर पर लोहे की छड़ों और बंदूकों से हमला किया, तोडफोड़ की। बैरकपुर लोकसभा क्षेत्र में आने वाले उत्तर 24 परगना के भाटपारा में भी हिंसा हुई। नतीजों के बाद भाजपा कार्यकर्ताओं के घरों पर देसी बम फेंके गए।

दक्षिण 24 परगना के नरेन्द्रपुर में एक भाजपा एजेंट के घर में तोड़फोड़ और हावड़ा में एक भाजपा कार्यकर्ता के आवास पर देशी बम फेंके जाने की खबरें आईं। पश्चिम बंगाल भाजपा नेतृत्व ने बताया कि चुनाव परिणाम आने के बाद कई पार्टी समर्थकों को संदेशखाली से भागना पड़ा। संदेशखाली उत्तर 24 परगना में बशीरहाट लोकसभा सीट के अंतर्गत आता है। भाजपा कार्यकर्ताओं के करीब 40 परिवारों ने दक्षिण कोलकाता के जादवपुर इलाके में पार्टी कार्यालय में शरण ली। चुनाव बाद हिंसा की घटनाएं उन सीटों पर भी हुईं जहां भाजपा तृणमूल से हारी थी। शहर के उपनगरों बिजॉयगढ़, कमरहाटी और जादवपुर में न केवल भाजपा समर्थकों बल्कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के कार्यकर्ताओं को भी निशाना बनाया गया। मतदान समाप्त होने के एक दिन बाद 2 जून को नादिया जिले में कथित तौर पर चुनाव के बाद की हिंसा की घटना में एक भाजपा कार्यकर्ता की हत्या कर दी गई थी।

चुनावी हिंसा का रहा है इतिहास

पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा की शुरुआत नक्सल आंदोलन के साथ हुई। 1960 से 1970 के बीच शुरू हुई नक्सली हिंसा धीरे-धीरे राजनीतिक हिंसा में बदल गई। पिछले पचास सालों में पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा में करीब 30 हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। पिछले साल हुए पंचायत चुनावों में 40 से अधिक लोगों की जान चली गई थी।

(हेमलता)

गंगा माता के अवतरण दिवस पर स्वच्छताकर्मियों का सम्मान

गंगा माता के अवतरण दिवस (गंगादशमी 16 जून) पर विद्याधर भाग (जयपुर) के झोटवाड़ा नगर में लगभग 135 सफाई कर्मचारियों का तिलक लगाकर, दुपट्टा पहनाकर व मिठाई भेंट कर सम्मान किया गया। इसी प्रकार करधनी में 22, बालाजी में 10, हरमाड़ा में 2 व विजय नगर में 20 स्वच्छताकर्मियों का सम्मान किया गया।

96 प्रतिशत मुस्लिम आबादी वाले देश ने हिजाब सहित
मुस्लिम परिधान पर लगाया प्रतिबंध

पाठकों को याद होगा कि दो वर्ष पूर्व 2022 के प्रारंभ में कर्नाटक के उडूपी जिले के एक सरकारी महाविद्यालय ने हिजाब पहनकर आने वाली मुस्लिम लड़कियों को कक्षा में प्रवेश से यह कह कर रोका था कि वे हिजाब हटाकर कक्षा में आएं। तब बड़ा बवाल मचा था। मुस्लिम समुदाय की ओर से बड़े जुलूस निकाले गए। कहा गया कि यह उनके धर्म में हस्तक्षेप है। मुस्लिम लड़कियों ने कहा कि चूंकि कक्षा में गैर मर्द (शिक्षक व छात्र) भी उपस्थित रहते हैं तो वे उनके सामने बिना हिजाब पहने कैसे आ सकती हैं?

इसके उलट उन्हीं दिनों विश्व ने देखा कि मुस्लिम देश ईरान में वहां की महिलाओं ने हिजाब पहनने की अनिवार्यता के विरुद्ध आंदोलन किया। उन्होंने अपने हिजाब को सामूहिक रूप से आग के हवाले कर दिया तथा इस्लामी परंपरा के विपरीत अपने बाल काटते हुए वीडियो पोस्ट किए। एक जानकारी के अनुसार इरान की कट्टरपंथी इस्लामी सरकार ने इस हिजाब विरोधी कानून को कुचलने में पूरी शक्ति लगा दी थी। बताते हैं कि इस कारण से सरकारी बलों द्वारा कम से कम 154 लोग मारे गए थे।

और अब, रूस और तालिबान शासित अफगानिस्तान की सीमा के पास स्थित मध्य एशियाई मुस्लिम बहुल देश ताजिकिस्तान ने बीती 19 जून को एक कानून बना कर महिलाओं द्वारा हिजाब, बुर्का, इस्लामी स्कार्फ, इस्लामी परिधान की अन्य पारम्परिक वस्तुओं के पहनने पर प्रतिबंध लगा दिया है। एशिया प्लस की रिपोर्ट के अनुसार **ताजिकिस्तान के अधिकारियों का मानना है कि इस तरह का पहनावा 'पराया या विदेशी परिधान' है जिससे ताजिकिस्तान को बचाना है तथा यह भी कि ऐसे परिधान इस्लामी कट्टरपंथ को बढ़ावा देते हैं। ताजिकिस्तान की संसद ने कहा कि महिलाओं के चेहरे को ढकने वाले बुर्का ताजिक परंपरा व संस्कृति का हिस्सा नहीं है। इसलिए ऐसे परिधानों पर प्रतिबंध लगाना जरूरी है।** ताजिकिस्तान की संसद (मजलिसी मिल्ली तथा मजलिसी नमोयंदगोन) मुस्लिम पुरुषों के मुस्लिम दाढ़ी रखने पर भी रोक लगा चुकी है।

ताजिकिस्तान की सरकार हिजाब को देश की सांस्कृतिक विरासत के लिए खतरा तथा विदेशी प्रभाव मानती है।

ईद के त्योहार पर बच्चों के गली-गली या घरों में जाकर बधाई देने तथा उन्हें बड़ों द्वारा ईदी देने की प्रथा को भी संसद ने उचित नहीं मानते हुए प्रतिबंधित कर दिया है। वे इसे विदेशी प्रथा तथा बच्चों की पढ़ाई में बाधक कार्य मानते हैं।

इस नए नियम का उल्लंघन करने पर 60 हजार से 5 लाख रुपए तक का जुर्माना लगाने का प्रावधान किया गया है। उल्लेखनीय है कि ताजिकिस्तान में 96 प्रतिशत मुस्लिम रहते हैं।

वहां के वर्तमान राष्ट्रपति इमोमाली रहमान ने 2015 में हिजाब के विरुद्ध आंदोलन चलाया था।

वर्ष 2007 में वहां के शिक्षा मंत्रालय ने छात्रों के लिए इस्लामी परिधान और पश्चिमी शैली की मिनी स्कर्ट पहनने पर रोक लगा दी थी। अब सार्वजनिक स्थानों पर भी कोई इस प्रकार के कपड़े पहनकर नहीं आ सकता।

सरकार का कहना है कि ताजिकिस्तान की अपनी संस्कृति और परंपरागत परिधान है, लोगों को उनका पालन करना चाहिए। ताजिकिस्तान के पड़ोसी मुस्लिम देश अजरबैजान, किर्गिस्तान और कोसोवो ने विद्यालयों एवं सरकारी कार्यालयों में हिजाब व बुर्का पहनने पर पहले ही प्रतिबंध लगाया हुआ है। (राम)

वीएसके फाउंडेशन को जयपुर में
आवश्यकता है
• **कंटेंट राइटर / रिसर्चर- 03** • **कार्यालय सहायक - 01**
• **वेतन** - योग्यतानुसार
आवेदन *jprvsk@gmail.com* पर 10 जुलाई, 2024 तक मेल करें।

सम्राट पृथ्वीराज चौहान की अमर गाथा

युद्ध में आंखें खोने के बाद भी गौरी को मारने में नहीं चूके चौहान

12वीं सदी के उत्तरार्द्ध में अजमेर और दिल्ली पर राज करने वाले हिंदू सम्राट पृथ्वीराज चौहान बचपन से ही कुशल योद्धा थे। उनके बारे में कहा जाता है कि वे इतने शक्तिशाली थे कि एक बार बिना किसी हथियार के शेर को मार दिया था।

दिल्ली का राय पिथौरा किला पृथ्वीराज चौहान ने बनवाया था। आज यह स्थान दिल्ली के पुराने किले के नाम से जीर्णावस्था में है। वे संस्कृत, प्राकृत, मगधी, अपभ्रंश आदि छः भाषाओं के जानकार थे। बताया जाता है कि उनकी सेना में 3 लाख सैनिक तथा 300 हाथी सहित बड़ी संख्या में घुड़सवार थे।

पृथ्वीराज चौहान तीर कमान और तलवार संचालन में निपुण थे। कन्नौज के राजा जयचंद से उनकी अनबन थी। कहा जाता है कि जयचंद ने अपनी बेटी संयोगिता के स्वयंवर में पृथ्वीराज को नहीं बुलाया तथा उनका अपमान करने के इरादे से उनकी मूर्ति बनवाकर द्वारपाल के रूप में रखवा दी गई थी। संयोगिता ने वरमाला उसी मूर्ति के गले में पहना दी। बताते हैं कि पृथ्वीराज वहां उपस्थित थे और वे संयोगिता को अपने साथ उठाकर ले गए।

अफगानिस्तान के मुस्लिम सुल्तान मुहम्मद शहाबुद्दीन गौरी से पृथ्वीराज चौहान का युद्ध इतिहास प्रसिद्ध है।

कहा जाता है कि पृथ्वीराज चौहान ने 1186 से 1191 के मध्य मोहम्मद गौरी को कई बार धूल चटाई। प्रसिद्ध कवि चंदबरदाई पृथ्वीराज चौहान के मित्र थे। उनके द्वारा लिखित ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार पृथ्वीराज ने 17 बार मोहम्मद गौरी को हरा कर बंदी बनाया और हर बार उसे क्षमा कर छोड़ दिया। परंतु 18वीं बार मोहम्मद गौरी विजयी रहा। उसने पृथ्वीराज को क्षमा नहीं किया। वर्ष 1191 में थानेश्वर (हरियाणा) के निकटवर्ती 'तराइन के मैदान' में उनके बीच हुए प्रथम युद्ध में गौरी बुरी तरह परास्त हुआ था, परंतु एक वर्ष बाद ही 1192 में गौर फिर से सेना लेकर लौटा। कहते हैं कि राजा जयचंद ने गद्दारी दिखाई और गौरी से मिल गया। यह युद्ध भी तराइन के मैदान में हुआ। इस बार पृथ्वीराज को हार मिली। गौरी उन्हें बंदी बनाकर अपने साथ ले गया।

तारागढ़ (अजमेर) स्थित स्मारक

गौरी ने गर्म सलाखों से पृथ्वीराज की आँखें फोड़ दी थी। पृथ्वीराज के मित्र चंदबरदाई को भी बंदी बनाकर गौरी अपने साथ ले गया था। पृथ्वीराज चौहान शब्दभेदी बाण चलाने में माहिर थे। मोहम्मद गौरी को इसकी जानकारी दी गई और यह कला देखने को कहा गया । गौरी ने इस कला के प्रदर्शन की स्वीकृति दे दी।

पृथ्वीराज चौहान को जहां पर अपनी कला का प्रदर्शन करना था वहां पर मुहम्मद गौरी भी मौजूद था। पृथ्वीराज चौहान ने चंदबरदाई के साथ मिलकर मुहम्मद गौरी को मारने की योजना पहले ही बना ली थी। महफिल शुरू होने वाली थी तभी चंदबरदाई ने एक दोहा कहा– 'चार बांस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है मत चूके चौहान'।

चंदबरदाई ने पृथ्वीराज चौहान को संकेत देने के लिए इस दोहे को पढ़ा था। इस दोहे को सुनने के बाद मोहम्मद गोरी ने जैसे ही शाबाश बोला। वैसे ही अपनी आंखों को गवा चुके पृथ्वीराज चौहान ने मुहम्मद गोरी को अपने शब्दभेदी बाण से मार दिया। हालांकि सबसे दुख की बात यह है कि इसके बाद पृथ्वीराज चौहान और चंदबरदाई ने दुर्गति से बचने के लिए एक दूसरे को मार दिया।

इस प्रकार पृथ्वीराज ने अपने अपमान का बदला लिया था। पृथ्वीराज के मरने की खबर सुनने के बाद संयोगिता ने अपनी जान दे दी।

नई पीढ़ी को बताएं सम्राट पृथ्वीराज की बलिदान गाथा

चीता, मेहरात, काठात पृथ्वीराज चौहान के वंशज

सम्राट पृथ्वीराज चौहान की 858वीं जयंती पर देशभर में कई स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए।

राजस्थान के ब्यावर में संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने चीता, मेहरात, काठात को सम्राट पृथ्वीराज चौहान का वंशज बताते हुए कहा कि आक्रांता गौरी द्वारा आंखें निकाल देने के बाद भी पृथ्वीराज चौहान ने अपना धर्म नहीं बदला तथा सनातन धर्म के लिए सर्वस्व अर्पित कर हुतात्मा हो गए। उन्होंने आगे कहा कि सम्राट पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप और महाराजा सूरजमल की बलिदान गाथाएं आने वाली पीढ़ी को बतानी चाहिए। वे ब्यावर स्थित आशापुरा माता धाम में 'सम्राट पृथ्वीराज चौहान-जन्मोत्सव समिति' द्वारा आयोजित जयंती पखवाड़े के समापन समारोह (16 जून) को संबोधित कर रहे थे।

जयंती पखवाड़े की शुरुआत सम्राट पृथ्वीराज चौहान के जयंती दिवस 3 जून (इस वर्ष) से हुई। आशापुरा माता धाम स्थित सम्राट पृथ्वीराज की प्रतिमा पर दुग्धाभिषेक किया गया और सप्तशती हवन हुआ। मगरा-मेरवाड़ा क्षेत्र के गांवों में 3 जून से 15 जून तक ग्रामोत्थान के कार्यक्रमों के द्वारा पृथ्वीराज चौहान के जीवन चरित्र की जानकारी सामान्यजन तक पहुँचाई गई। 6-7 जून को 'राजस्थान ओपन कबड्डी प्रतियोगिता' हुई।

समापन कार्यक्रम में उपस्थित राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल ने मेहरात समाज के धर्म योद्धाओं का सम्मान किया। जन्मोत्सव समिति के अध्यक्ष पूरण सिंह रावत ने बताया कि 'चीता, मेहरात, मगरा, मेरवाड़ा हिंदू महासभा' की ओर से सामूहिक विवाह का भी आयोजन किया गया था जिसमें 14 जोड़ों का विवाह सम्पन्न कराया गया।

तारागढ़ (अजयमेरू) स्थित स्मारक पर कार्यक्रम

अजयमेरू (अजमेर) में अरावली पर्वत श्रृंखला पर स्थित तारागढ़ में सम्राट पृथ्वीराज का विशाल स्मारक बना हुआ है। तारागढ़ की तलहटी पर देश भक्ति से सजी सांस्कृति संध्या का आयोजन किया गया। पर्यटन विभाग द्वारा राजस्थानी संस्कृति से संबंधित विभिन्न आकर्षक प्रस्तुतियां दी गईं। राजस्थान सरकार में मंत्री सुरेश सिंह रावत तथा सांसद भागीरथ चौधरी ने सम्राट की यशोगाथा को जन-जन तक पहुँचाने की बात की। इस अवसर पर राईफल शूटिंग, रंग भरो सहित कई प्रतियोगिताएं हुई।

3 जून को पुष्पांजलि कार्यक्रम में बोलते हुए धर्म जागरण क्षेत्रीय संयोजक डॉ. ललित कुमार शर्मा ने कहा कि सम्राट पृथ्वीराज स्मारक हिंदू गौरव का भान कराने का विग्रह तथा इतिहास स्मरण कराने वाला स्थान है। हर व्यक्ति को यहां अवश्य आना चाहिए।

राष्ट्रभक्तों के लिए प्रेरणा का केन्द्र है दाहिरसेन स्मारक

महाराजा दाहिरसेन का बलिदान अखण्ड भारत के स्वर्णमयी इतिहास का अहम पड़ाव है, क्योंकि भारत की पश्चिमी सीमा पर होने वाले आक्रमणों को रोकने का साहस शताब्दियों तक सिंध के शासक करते रहे। यह कहना है संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम का। वे बीती 16 जून को अजमेर में महाराजा दाहिरसेन के 1312वें बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि स्वतंत्र भारत के साथ विभाजन का दुखद पल भी हमारे हिस्से आया और गौरवमय सिंध हम से अलग हो गया, किंतु इतिहास फिर बदलेगा और सिंध की पावन धरती पर अपने गौरवशाली इतिहास को फिर से जीवंत देख सकेंगे । इसी दिशा में हमें सतत प्रयास करते रहना चाहिए।

इस परिवर्तन के लिए संपूर्ण समाज को एक होकर खड़ा होना होगा। आज विश्वभर के लोग भारत की और देख रहे हैं। हम एक रहेंगे, सजग रहेंगे, अपने जीवन मूल्यों को बचाकर रखेंगे, तभी अखण्ड भारत का स्वरूप इसी जीवनकाल में देख सकेंगे।

इसी क्रम में बीती 14 जून को एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'विश्व के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सिन्धुपति महाराजा दाहरसेन' विषय पर बोलते हुए भीलवाड़ा हरीशेवा धाम के महामंडलेश्वर हंसराम उदासीन जी महाराज ने कहा कि 'तीन सुधारे देश को संत, सती व सूर'। हमें इतिहास में महाराजा दाहिरसेन, पत्नी लाडीबाई व पुत्रियां सूर्यकुमारी व परमाल जैसा बलिदान कम देखने को मिलता है।

नई पीढ़ी को महाराजा दाहिरसेन के जीवन व बलिदान की गाथा की जानकारी होना आवश्यक है, सरकार द्वारा इसे पाठयक्रमों में जोड़ना चाहिए व शोध संस्थानों के माध्यम से आमजन तक गौरवमयी इतिहास की जानकारी पहुँचनी चाहिए।

गोष्ठी के मुख्य वक्ता राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रौन्नति प्राधिकरण के अध्यक्ष ओंकार सिंह लखावत ने कहा कि संसार में सबसे पुरानी व समृद्ध सिन्धु घाटी सभ्यता है। वहां का कल्चर व रहन-सहन हमें बहुत कुछ सिखाता है। सिन्धु नदी के किनारे वेदों की रचना की गई और व्यापार का सबसे बड़ा केन्द्र कराची सिन्ध में था।

वरिष्ठ साहित्यकार श्याम सुन्दर भट्ट ने महाराजा दाहिरसेन के जीवन व उनके काल खण्ड पर और अधिक शोध की आवश्यकता बताई।

भारतीय सिन्धु सभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष महेन्द्र कुमार तीर्थाणी ने बताया कि स्मारक परिसर में स्वतंत्रता आंदोलन में बलिदान हुये महापुरूषों में से हेमू कालाणी, राणा रतन सिंह व रूपलो कोल्ही की मूर्तियाँ भी स्थापित हो चुकी है। महाराजा दाहिरसेन के बलिदान दिवस पर अजमेर के अलावा देश भर में 200 स्थानों पर प्रश्नोत्तरी, संगोष्ठी व देशभक्ति गीतों के कार्यक्रम होने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

कार्यक्रम का आयोजन सिंधुपति महाराजा दाहिरसेन समारोह समिति, अजमेर विकास प्राधिकरण, नगर-निगम और भारतीय सिंधु सभा के संयुक्त तत्वावधान में किया गया था।

राजा दाहिरसेन का बलिदान

सिन्ध के महाराजा चच के असमय देहांत के बाद उनके 12 वर्षीय पुत्र दाहिरसेन गद्दी पर बैठे, राज्य की देखभाल उनके चाचा चन्द्रसेन करते थे पर छह वर्ष बाद चन्द्रसेन का भी देहांत हो गया। अत: राज्य की संपूर्ण जिम्मेदारी 18 वर्षीय दाहिरसेन पर आ गयी। उन्होंने देवल को राजधानी बनाकर अपने शौर्य से राज्य की सीमाओं का कन्नौज, कंधार, कश्मीर और कच्छ तक विस्तार किया। राजा दाहिरसेन सिन्ध के अंतिम हिंदू राजा थे।

ईरान के शासक हज्जाम ने 712 ई0 में अपने सेनापति मोहम्मद बिन कासिम को एक विशाल सेना देकर सिन्ध पर हमला करने के लिए भेजा। कासिम ने देवल के किले पर कई बार आक्रमण किए पर हिन्दू वीरों ने हर बार उसे पीछे धकेल दिया। सीधी लड़ाई में बार-बार हारने पर कासिम ने धोखे से यह लड़ाई जीतने की योजना बनाई।

उसने सैकड़ों अरब सैनिकों को हिन्दू महिलाओं जैसा वेश पहना कर दाहिरसेन की राजधानी में प्रवेश कराया। युद्ध के समय सैनिकों ने वास्तविक रूप में आकर हिंदू सेना पर हमला किया। इस युद्ध में राजा दाहिर विश्वासघात के शिकार हुए और शत्रु द्वारा चारों ओर घिर गए। लंबे संघर्ष के बाद अंतत: शत्रु सैनिकों के भालों से उनका शरीर क्षत-विक्षत होकर मातृभूमि की गोद में सदा के लिए सो गया।

राजा दाहिरसेन के बाद उनकी पत्नी लाडीबाई, बहन पद्मा और दोनों पुत्री सूर्य कुमारी व परमार भी मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान हो गईं।

शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना के केन्द्र बन रहे हैं मदरसे

दीनी तालीम के नाम पर मदरसों में जो कुछ चल रहा है वह चौंकाने वाला है। कहीं से शारीरिक शोषण, क्रूरता, मानसिक प्रताड़ना की तो कहीं से कट्टरता के पाठ पढ़ाए जाने की खबरें आना आम बात सी हो गई है।

अभी कुछ दिनों पहले अजमेर में मदरसे के 5 छात्रों ने इमाम को डंडे से पीट-पीट कर और रस्सी से गला घोंट कर इसलिए मार डाला था क्योंकि वे इमाम के शोषण से तंग आ चुके थे। ऐसे ही दक्षिण सलमारा (असम) जिले के एक मदरसे के अंदर नाबालिक लड़के से मौलवी द्वारा यौन शोषण की घटना का खुलासा हैरत में डालने वाला था।

यदि हम कुछ महीनों पहले का आंकड़ा देखें तो पता चलता है कि दीनी तालीम घर (मदरसों) में हो रही कुकर्म की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। बच्चों को निर्ममता से पीटना, कक्षा में छात्राओं से छेड़छाड़ करना, अश्लील इशारे करना आम बात है।

जानकारों का कहना है कि कई मदरसों में कट्टरपंथ की शिक्षा दी जाती है।

मदरसों में शारीरिक शोषण या अन्य किसी प्रकार की असंवैधानिक गतिविधि का संचालन कोई सामान्य घटना तो नहीं कही जा सकती है। सवाल यह है कि इस प्रकार की खबरें आने के बाद भी मजहब की बात करने वाले अपने बच्चों को आधुनिक शिक्षा देने के बजाए मदरसों में क्यों भेजते हैं? ऐसी ही कुछ घटनाओं की जानकारी यहां दी जा रही है-

30 अप्रैल, 2024 : मदरसे के सीनियर छात्र ने 8 साल के लड़के के साथ किया कुकर्म, आरोपी गिरफ्तार (मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश)

26 अप्रैल, 2024 : 93 बच्चों को बस में भरकर लाने वाले 5 मौलवी पकड़े गए। आप बीती सुनाकर रो दिए बच्चों ने बताया कि मौलवी उन्हें पीटते थे, जुल्म करते थे। (लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

29 फरवरी, 2024 : मदरसे में लड़के को तालिबानी सजा, मौलवी के आदेश पर सभी छात्रों ने पहले थूका फिर की पिटाई (संभाजी नगर, महाराष्ट्र)

21 फरवरी, 2024 : मदरसे में मौलाना और उसके भाई ने 8 साल की बच्ची के साथ किया दुष्कर्म (लखनऊ, उत्तर प्रदेश)

11 नवम्बर, 2023 : मदरसे में उर्दू की तालीम के नाम पर अमानवीयता की हदें पार, बच्चे को जंजीरों से बाँधा (सहारनपुर, उत्तर प्रदेश)

03 नवम्बर, 2023: अवैध मदरसे से मुक्त कराए 24 बीमार बच्चे, शारीरिक शोषण, मारपीट और अश्लील फिल्में दिखाने का आरोप (नैनीताल, उत्तराखंड)

25 अक्टूबर, 2023: मदरसे में 10 बच्चों के साथ मौलाना ने किया कुकर्म (जूनागढ़, गुजरात)

10 अक्टूबर, 2023 : मदरसा के मौलाना ने 13 वर्षीय नाबालिग छात्रा के साथ 3 महीने तक किया दुष्कर्म (सहरसा, बिहार)

(मनोज)

संघ शाखा में स्वयंसेवकों पर मुस्लिम युवकों ने किया हमला

सर्व समाज आया विरोध में आरोपी किए गए गिरफ्तार

बीती 23 जून को भीलवाड़ा के महात्मा गांधी चिकित्सालय के सामने पार्क में लग रही संघ शाखा के स्वयंसेवकों पर डेढ़ दर्जन से अधिक मुस्लिम युवकों ने हमला किया। इस हमले में स्वयंसेवक पार्थ चौहान और सोमनाथ सोनी गंभीर रूप से घायल हो गए, दोनों स्वयंसेवकों का अभी अस्पताल में उपचार चल रहा है।

घटना शहर के भीमगंज क्षेत्र की है जहाँ शाखा के पास ही कुछ मुस्लिम बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे जिनकी बॉल बार बार शाखा की तरफ आ रही थी। स्वयंसेवकों ने उन्हें कई बार समझाया लेकिन मुस्लिम युवकों ने बैट और स्टंप से स्वयंसेवकों पर हमला कर दिया।

घटना को लेकर आक्रोशित हुए सर्व हिन्दू समाज के लोगों ने भीमगंज थाने के बाहर बड़ी संख्या में एकत्रित होकर आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की। विहिप व संघ के कार्यकर्ताओं ने भीमगंज थाने में एएसपी विमल सिंह के साथ मीटिंग की, जिसमें प्रशासन को चेतावनी दी कि 24 घंटे में आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं हुई तो आंदोलन होगा। हालांकि उक्त मामले में पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है तथा 6 नाबालिकों को संरक्षण में लिया है। इनमें अमान, अयान, आबिद हुसैन, मो. रफीक, इसरत अली और साहिद खान शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि पाली, जोधपुर आदि स्थानों पर भी समुदाय विशेष के कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा अवांछनीय हरकतें करने के समाचार आते रहे हैं, परंतु अब सर्वसमाज जागरूक होकर प्रतिकार करने लगा है। समाज की एकता को देखकर प्रशासन और पुलिस को भी त्वरित कार्रवाई करनी पड़ती है।

भारतीय महिला को स्वतंत्र सोच रहित व पिछड़ेपन के रूप में दिखाने का षड्यंत्र

बीबीसी हिन्दी न्यूज को दिया गया लीगल नोटिस

पिछले दिनों कई ऐसे अवसर आए जब इंग्लैण्ड की बीबीसी हिन्दी न्यूज चैनल ने भारत और भारतीयता के प्रति अपनी नफरत को सार्वजनिक रूप से प्रकट किया है तथा भारत की गलत छवि बनाने का प्रयास किया गया। अभी हाल ही में बीबीसी हिन्दी न्यूज द्वारा एक रिपोर्ट प्रसारित की गई जिसमें साजिशपूर्ण एजेंडे के अंतर्गत भारतीय महिलाओं द्वारा स्वतंत्र सोच नहीं रखने और अपनी सोच पति की सोच पर आधारित होना दिखाया गया तथा रिपोर्ट में उन्हें पिछड़ेपन से ग्रसित होना दर्शाया गया है।

रिपोर्ट में संघ के कतिपय कार्यकर्ताओं की पत्नियों से बातचीत करते हुए संघ की पद्धति और कार्य प्रणाली पर अनावश्यक और आधारहीन प्रश्न उठाने का प्रयास किया गया। महिलाओं की निजी राय को इस तरह प्रस्तुत किया गया कि मानो वह संघ के विचार हों।

जयपुर के विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारी श्री सुरेश उपाध्याय की पत्नी और पुत्री से पूछा गया कि क्या महात्मा गांधी के प्रति उनके मन में रेस्पेक्ट है? उनकी पत्नी द्वारा कहा गया कि हाँ, रेस्पेक्ट तो है। परंतु रिपोर्ट में उनके कथनों को गांधी के प्रति नफरत के रूप में प्रस्तुत किया गया। रिपोर्ट में अहमदाबाद के सेंटर फॉर डेवलपमेंट अल्टरनेटिव की प्रोफेसर इंदिरा हीरवे के संवादों को संघ के कार्यकर्ताओं की घर की महिला के साथ जोड़कर दिखाया गया है। वे संघ के कार्यकर्ता के संदर्भ में चर्चा में कहती हैं कि हरेक व्यक्ति अपने लालच से जुड़ता है जबकि वास्तविकता यह है कि एक स्वयंसेवक संघ कार्य के लिए बिना किसी लोभ-लालच से जुड़ता है।

रिपोर्ट इस प्रकार से तैयार कर प्रकाशित की गई कि जिससे समाज में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को लेकर भ्रम पैदा किया जाए तथा भारतीय महिलाओं को पिछड़ेपन के बोध से ग्रसित होना बताया जाए।

बीबीसी की उपरोक्त प्रकार की कुत्सित और षड्यंत्र के अंतर्गत भारतीय महिला के लिए पिछड़ेपन का नैरेटिव बनाने के लिए बनाई गई रिपोर्ट को चैनल से तुरंत हटाने का नोटिस विहिप के कार्यकर्ता श्री सुरेश उपाध्याय, उनकी पत्नी व पुत्री तथा श्री नारायण गमेती द्वारा जरिए वकील बीबीसी न्यूज चैनल तथा बीबीसी संवाददाता रजनीश कुमार को भेजा गया है जिसमें सात दिनों में सभी रिपोर्ट हटाने तथा ऐसी रिपोर्ट प्रसारित करने पर खेद प्रकट करने को कहा गया है।

चिनाब पर बना दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज

बीती 20 जून को जम्मू-कश्मीर में चिनाब नदी पर बने दुनिया के सबसे ऊँचे रेल पुल 'चिनाब ब्रिज' पर सफलतापूर्वक आठ कोच वाली मेमू रेल (इलेक्ट्रिक मल्टिपल इकाई रेल, जो छोटे व मध्यम दूरी की सेवा देती है) को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हरी झण्डी दिखाई। यह पल भारतीयों के लिए गौरवान्वित करने वाला था। परियोजना स्वतंत्रता के बाद भारतीय रेलवे की ओर से किए गए सबसे चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक है।

भारत सरकार ने कश्मीर घाटी तक हर मौसम में जाने के लिए 35 हजार करोड़ रुपये की लागत से उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक परियोजना शुरू की है। यह पुल इसी योजना के तहत बनाया गया है। रामबन जिले के संगलदान और रियासी के बीच बना यह पुल 46 कि.मी.लम्बा है। इस योजना के तहत 38 सुरंग और 927 पुल बनाए गए। जिनमें चिनाब पुल सबसे ऊँचा(359 मीटर) है जो पेरिस के एफिल टावर (330 मीटर) से भी ऊँचा है। 25 हजार मीट्रिक टन स्टील का उपयोग इसके निर्माण में किया गया है। ब्रिज की विशेषता यह भी है कि यह 40 किलो तक विस्फोटक तथा रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता तक भूकंप की मार झेल सकने की क्षमता रखता है। इसके साथ ही 220 किमी.घंटा की रफ्तार से आने वाली हवा/आंधी को भी यह आसानी से झेल सकता है।

सामरिक महत्व

चिनाब ब्रिज कश्मीर के अखनूर इलाके में बना है। जिस प्रकार नार्थ ईस्ट में सिलीगुड़ी कॉरिडोर को चिकन नेक कहा जाता है, जहां अगर चीन का कब्जा हो जाए तो देश दो हिस्सों में टूट सकता है। इसी तरह अखनूर क्षेत्र कश्मीर का चिकन नेक है। इसलिए इस क्षेत्र में चिनाब ब्रिज का बनना भारत के लिए सामरिक तौर पर बेहद खास है। इसके बनने से अब हर मौसम में सेना के साथ-साथ आम लोग भी ट्रेन से आ-जा सकेंगे। अब इसके माध्यम से कश्मीर घाटी सीधे तौर पर भारत के दूसरे हिस्से से जुड़ जाएगी।

उच्च शिक्षा में कार्यरत हजारों शिक्षकों की सहभागिता के साथ सम्पन्न हुआ अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ का अधिवेशन

- *भारतीयता के प्रति श्रद्धा व परिवार भाव से चलने वाला संगठन*
- *शिक्षा, समाज व राष्ट्र का हित-चिंतन व विश्वकल्याण भाव जगाने का कार्य*
- *भारत के विचार के प्रति स्वयं की प्रतिबद्धता*
- *व्यक्तिगत हित से ऊपर शैक्षिक-विद्यार्थी हित तथा समाज-राष्ट्र हित*

राजस्थान की राजधानी जयपुर में गत 21 जून को विश्वविद्यालय शिक्षकों के अग्रणी संगठन 'अ.भा.राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (उच्च शिक्षा) के राजस्थान क्षेत्र का सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

मंच पर राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल तथा उपमुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ.प्रेमचंद बैरवा की उपस्थिति में उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए महासंघ के अ.भा. अध्यक्ष प्रो. जेपी सिंहल ने कहा कि यह संगठन मात्र शिक्षक समस्याओं के लिए कार्य नहीं करता अपितु समग्र भारतीयता के प्रति अपनी श्रद्धा और परिवार भाव से चलने वाला संगठन है। महासंघ के राजस्थान क्षेत्र के अध्यक्ष डॉ.दीपक कुमार शर्मा का कहना था कि शिक्षकों का यह संगठन शिक्षा, समाज व राष्ट्र का हित चिंतन करते हुए समग्र विश्व कल्याण के व्यापक भाव के साथ काम करता है। उन्होंने इस संदर्भ में महासंघ द्वारा कॉलेज-विश्वविद्यालयों में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रम- कर्त्तव्यबोध दिवस, गुरु वन्दन तथा भारतीय नववर्ष का उल्लेख किया जिनके माध्यम से अब तक फैलाई गई मिथ्या धारणाओं के प्रतिकार के साथ ही राष्ट्रहित में तर्कपूर्ण विमर्श खड़ा करने का प्रयास किया जाता है।

महासंघ (राजस्थान) के महामंत्री डॉ. सुशील कुमार बिस्सु ने राज्य की उच्च शिक्षा समस्याओं पर विस्तार से चर्चा करते हुए उनके समाधान की मांग मुख्यमंत्री और शिक्षामंत्री से की। मुख्यमंत्री और शिक्षामंत्री की ओर से इन समस्याओं के निस्तारण हेतु किए जा रहे राज्य सरकार के प्रयासों का उल्लेख किया गया।

राममंदिर से राष्ट्रमंदिर

अधिवेशन के प्रारम्भिक सत्र में हुए 'देराश्री स्मृति व्याख्यान' में बोलते हुए राजस्थान विधान सभा के सभापति प्रो.वासुदेव देवनानी ने कहा कि राममंदिर भारतीय समाज के लिए मात्र एक आराध्य का पूजा स्थल ही नहीं है अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता, अखण्डता, स्वत्व, स्वाभिमान तथा संघर्ष क्षमता की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति का प्रकटीकरण है। विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.अल्पना कटेजा ने कहा कि राम की प्रतिष्ठा का स्पष्ट अभिप्राय धर्म की प्रतिष्ठा है। संस्कृति की रक्षा ही राष्ट्र की रक्षा है।

भारत के विचार के प्रति स्वयं की प्रतिबद्धता

अधिवेशन के समापन सत्र के मुख्य वक्ता संघ के क्षेत्र प्रचारक श्री निम्बाराम ने कहा कि यदि सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा है तो भारत के विचार के प्रति अपनी स्वयं की प्रतिबद्धता के साथ सामाजिक समरसता, स्वदेशी प्रेम, 'स्व' का बोध तथा जीवन मूल्यों को व्यवहार के केन्द्र में लाना होगा। हमें प्रबुद्ध शक्ति, मातृशक्ति, सज्जन शक्ति, युवा ऊर्जा आदि को जोड़कर सभ्य एवं भव्य भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए स्वयं से प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि नकारात्मक शक्तियों द्वारा भारत विरोधी विमर्श को ध्वस्त कर भारतपोषी विमर्श, विचार, शिक्षा, नैतिक आचरण, ज्ञान-विज्ञान के प्रसार में हम सबका सहभाग और उत्तरदायित्व है।

महासंघ के अ.भा.संगठन मंत्री श्री महेन्द्र कपूर ने शैक्षिक महासंघ के इतिहास तथा विस्तार की चर्चा की। उन्होंने शिक्षक संघ के नाते वेतनभत्तों की मांग को आवश्यक बताते हुए कहा कि इनसे भी ऊपर जिस समाज में हम रहते हैं उसके लिए चिंतन-मनन तथा यथासंभव अपनी भूमिका का निर्वाह करना होगा। हमारे लिए व्यक्तिगत हितों से ऊपर शैक्षिक हित, विद्यार्थी हित, समाजहित और राष्ट्रहित हैं।

अधिवेशन में शैक्षिक महासंघ के अ.भा. अतिरिक्त महामंत्री प्रो.नारायण लाल गुप्ता, प्रदेश संगठन मंत्री श्री घनश्याम, 10 विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्य की उच्च शिक्षा के प्रमुख शासन सचिव, आयुक्त, अतिरिक्त आयुक्त सहित अनेक अधिकारीगण, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक संगठनों के प्रमुखों की उपस्थिति में लगभग 3500 शिक्षकों की सहभागिता रही।

क्रांतिकारी सरदार उधम सिंह

उधम सिंह का माता-पिता द्वारा दिया गया नाम शेरसिंह था। आठ वर्ष की आयु में माता-पिता का साया सिर से उठ गया तो अनाथालय में उनका लालन-पालन हुआ और वहीं से नाम मिला उधम सिंह।

13 अप्रैल, 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में रॉलेट एक्ट के विरोध में शांति से सभा कर रहे हजारों निर्दोष लोगों पर अंग्रेज जनरल डायर के सिपाहियों ने बेशुमार गोलियां बरसाई। इस नरसंहार के दिन वे वहीं पर थे।

उधम सिंह ने वहां मरते और तड़पते लोगों को देखा तो जनरल डायर को मारने का संकल्प लिया।

अपने संकल्प को पूरा करने के लिए वे क्रांतिकारियों से जा मिले, गदर पार्टी के सदस्य बने और कई देशों की यात्रा करते हुए इंग्लैण्ड पहुंचे। वहां पहुँचने पर पता चला कि ब्रेन हेमरेज से जनरल डायर की मृत्यु हो चुकी है। तब उधम सिंह ने पंजाब के तत्कालीन गवर्नर माइकल ओ डायर को मार कर बदला लेने की सोची।

नरसंहार के ठीक 21 वर्ष बाद 13 मार्च, 1940 को वह अवसर आया जब उसे अपना संकल्प पूरा होते दिख रहा था। 'रॉयल सेंटर एशियन सोसायटी और ईस्ट इंडिया एसोसिएशन' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित एक समारोह में भाषण देने डायर पहुंचा। उधम सिंह भी मोटी किताब में रिवाल्वर को छिपाकर किसी तरह उस सभा में शामिल हुए। जैसे ही डायर का भाषण खत्म हुआ भीड़ को चीरता हुआ यह भारतीय नौजवान अपनी पिस्तौल से गोलियां दागने लगा। लगातार चली पाँच गोलियों ने माइकल ओ डायर के शरीर को ठण्डा कर दिया। इसी के साथ उधम सिंह ने जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लिया और अपनी गिरफ्तारी दी। अंग्रेजों द्वारा न्याय का नाटक खेला गया। उधम सिंह को (31 जुलाई,1940) को लंदन की पेंटनविले जेल में सुबह 9:00 बजे मृत्यदण्ड देने की सजा सुनाई गई। सजा सुनकर उधम सिंह ने कहा ''मैंने डायर को इसलिए मारा क्योंकि वह सम्मान का नहीं मृत्युदण्ड का अधिकारी था। न मुझे कोई चिंता है और न मौत का डर। देश के लिए यदि कोई जवानी में मरता है तो यह अच्छी बात है। मैं भी यही कर रहा हूँ। अपनी मातृभूमि के लिए मैं अपने जीवन की भेंट दे रहा हूँ।''

उनकी स्मृति बनाए रखने के लिए उत्तराखण्ड के एक जिले का नाम 'उधमसिंह नगर' रखा गया है। उन पर पिछले दिनों एक फिल्म भी बनी है। (मनोज)

उमाकांत केशव आप्टे

उमाकांत केशव आप्टे उपाख्य 'बाबासाहब' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रारम्भिक प्रचारकों में से एक थे। डॉक्टर साहब ने उन्हें 'बाबा साहब' नाम दिया। अविरत 42 वर्षों तक आपने संपूर्ण देश में प्रवास कर संघ कार्य का विस्तार किया। ऐसे ध्येय समर्पित बाबा साहब के जीवन व कार्यशैली से प्रभावित होकर अनेकों कार्यकर्ता संघ कार्य हेतु प्रवृत्त हुए। प्रस्तुत है उनके संबंध में दो संस्मरण ...

1937 में बाबा साहब कानपुर आए थे। वहां उसी समय शाखा की शुरूआत हुई थी। सनातन धर्म महाविद्यालय के छात्रावास के एक विद्यार्थी कार्यकर्ता के यहां उनके ठहरने की व्यवस्था की गई। उस कार्यकर्ता को लगा, बाबा साहब दिनभर आराम करेंगे और शाम को एकाध दो भाषण करेंगे। उस समय अन्य नेतागण के काम की यही पद्धति रहती थी। परंतु बाबा साहब ऐसे न थे। वे छह बजे सुबह स्नान करके तैयार हुए। संपर्क और मेलजोल की जो शुरूआत हुई वह सीधे शाम तक चली। दिनभर पंद्रह-बीस परिवारों में संपर्क हुआ। उसके लिए पन्द्रह-बीस मील का चक्कर भी लगाया गया। संघ कार्य के उन आरंभिक दिनों में संपर्क के समय चाय-पानी शायद ही होता था। इसलिए दिनभर के संपर्क में बिल्कुल सस्ते भोजनालय से खरीदी हई पूरी-सब्जी यही खाना रहा। साथ घूमने वाला युवा कार्यकर्ता शाम को घर आकर बीमार पड़ गया। उस समय कानपुर में इक्के (तांगे) चलते थे, उसका एक-दो आना ही किराया रहता था, किन्तु उतना भी देने की संघ की स्थिति न थी। दिनभर पंद्रह बीस मीलों का चक्कर होने पर भी बाबा साहब विश्राम न लेते, शाम को छात्रावास के विद्यार्थियों के साथ संपर्क, संघ की बातें, गपशप बड़े उत्साह से चलता रहता था। ऐसे ही संपर्क से उस समय संघ को दो कार्यकर्ता मिले, एक दीनदयाल जी उपाध्याय और दूसरे थे सुंदर सिंह जी भंडारी।

नई ऐनक के पैसे न थे

एक दिन रज्जू भैया जी ने उनसे पूछा कि ऐनक (चश्मा) का नंबर इतना क्यों बढ़ गया? तब बाबा साहब बोले, पहले तो इतना नंबर न था, पर एक दिन ऐनक गुम हो गयी, नयी लेने के लिए पास पैसा न था, वैसे ही पढ़ता रहा तो नंबर बढ़ गया। उस वक्त चार-पांच रुपये में ऐनक मिलती थी, पर बाबा साहब के पास उतने पैसे न थे, न हीं उन्होंने डाक्टर जी से मांगे। शुरुआत के वक्त संघ प्रचारकों ने, कार्यकर्ताओं ने कैसी परिस्थितियों में संघ कार्य किया होगा, इसका अंदाजा आता है, किंतु बाबा साहब को न इस बात का गम था न इससे कोई शिकायत थी।

-साप्ताहिक विवेक द्वारा प्रकाशित राष्ट्र साधना (खण्ड-1) से साभार

आपातकाल का काला अध्याय
जब इंदिरा गांधी ने संविधान ही बदल दिया था

सन 1975 की 25 जून को भारतीय इतिहास में एक काले दिवस के रूप में सदैव याद किया जाएगा। इस दिन सेकुलरिज्म और संविधान की दुहाई देने वाली कांग्रेस की मसीहा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने संविधान की धज्जियां उड़ाते हुए अपनी सत्ता बचाने के लिए देश पर आपातकाल थोप दिया था। सारे विपक्ष सहित लाखों निरपराध लोगों को जेलों में ठूंस दिया। अखबारों, समाचार-संचार माध्यमों पर सेंसरशिप लागू कर सारे नागरिक अधिकार समाप्त कर दिए गए। विपक्ष दलों के नेताओं सहित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लाखों कार्यकर्ताओं को रातों रात उठा कर जेलों मे बंद कर दिया गया। सच बोलना तो दूर किसी को बोलने तक की आजादी नहीं थी। गांवों को घेर कर जोर-जबरदस्ती नसबंदी का अभियान चलाया गया। सारे देश में भय और आक्रोश का माहौल था। देश की वर्तमान युवा पीढ़ी को आपातकाल में हुई ज्यादतियों के विषय में पता नहीं है क्योंकि इस सारे षड्यंत्र को देश के मानसपटल से विस्मृत करने का भारी प्रयास किया गया। जो अत्याचार इमरजेंसी मे देश की जनता पर ढहाए गये वे अंग्रेजों के शासनकाल को भी मात करते थे।

आज कांग्रेस, राहुल गांधी और समूचा विपक्ष जो संविधान की दुहाई देकर मगरमच्छी आंसू बहा रहे हैं उन्हें आपातकाल का सही इतिहास पढ़ लेना चाहिए और तुलना करनी चाहिए अपनी दादी द्वारा किए गए जुल्मों व संविधान की अवमानना की आज के स्वच्छ, सुन्दर, सुरक्षित संवैधानिक शासन के वातावरण से। उद्दण्ड तरीके से सारा विपक्ष अपना भ्रष्टाचार उजागर होता देख कर विरोध के ऊलजलूल तरीके अपना रहा है। इंदिरा गांधी ने भारतीय संविधान के अनेक प्रावधानों में संशोधन कर एक प्रकार से अपने हित में संविधान ही बदल दिया था।

– *छगनलाल बोहरा*, *उदयपुर*

विडम्बना

25 जून, 2024 को जब संसद में आपातकाल के दौरान मारे गए लोगों को जो एक प्रकार से 'लोकतंत्र सेनानी' ही थे, श्रद्धांजलि दी जा रही थी तब इसका विरोध करने वालों में आपातकाल लागू करने की दोषी कांग्रेस के साथ आरजेडी, सपा आदि के सांसद भी थे। वे भूल गए कि आरजेडी के लालू प्रसाद यादव तथा सपा के मुलायम सिंह को भी कांग्रेस की इंदिरा गांधी ने आपातकाल के दौरान सलाखों के पीछे पहुँचा दिया था। –सं.

आपातकाल की ज्यादतियों की छानबीन करने हेतु गठित शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा था –

" जिस वक्त आपातकाल की घोषणा की गई उस वक्त देश में न तो आर्थिक हालात खराब थे और न ही कानून व्यवस्था में किसी तरह की कोई दिक्कत थी। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने देश में अपनी इच्छानुसार आपातकाल लगाया और इस संबंध में उन्होंने अपने पार्टी के कुछ लोगों को छोड़कर किसी भी सहयोगी से विचार-विमर्श तक नहीं किया। आजादी के बाद पहली बार आपातकाल के दौर में इतने बड़े स्तर पर नेताओं की गिरफ्तारी हुई थी। उन्हें हिरासत में रखने के लिए जेल अधिकारियों को पूर्व में कोई सूचना भी प्रदान नहीं की गई थी। "

– *न्यायमूर्ति जेसी शाह*

मोक्षदायिनी द्वारका

गुजरात में सौराष्ट्र के पश्चिमी तट पर स्थित द्वारका श्रीकृष्ण द्वारा स्थापित एक पौराणिक नगरी है। इसे गुजरात की प्रथम राजधानी भी माना जाता है। भगवान श्रीकृष्ण के आदेश पर विश्वकर्मा जी ने इस दिव्य-भव्य नगरी का निर्माण किया था। कई द्वारों का शहर होने के कारण इसका नाम द्वारका पड़ा। मान्यता है कि द्वारका में बड़े-बड़े राजा बहुत से विषयों पर भगवान श्रीकृष्ण की सलाह लेने आते थे। द्वारका हिंदू समाज के मोक्षदायक चार धामों और सप्त पुरियों में से एक है। इसे श्रीकृष्ण की कर्मभूमि भी कहा जाता है।

द्वारकाधीश्वर द्वारका में एक प्रमुख आकर्षण है, जहां भगवान कृष्ण के एक रूप रणछोड़राय जी का विशाल मंदिर है। इसे जगत मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। इस पर फहराती 52 गज (468 फीट) की धर्मध्वजा का दिन में पांच बार बदलना पर्यटक एवं श्रद्धालुओं के लिए विशेष आकर्षण रहता है। इसी मंदिर क्षेत्र में जगद्गुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित 'शारदा मठ' है। ऐसा माना जाता है भगवान कृष्ण की लीला समाप्त होने और परमधाम गमन के बाद द्वारका जलमग्न हो गई। तब भगवान श्रीकृष्ण के पड़पोते वज्रनाभ ने द्वारकाधीश मंदिर का निर्माण करवाया।

पुरातत्व विभाग में 'द्वारका प्रोजेक्ट' के निदेशक रहे डॉ.आलोक त्रिपाठी की एक रिपोर्ट के अनुसार खुदाई के दौरान मिले अवशेषों में द्वारका होने के प्रमाण हैं जिसका कुछ भाग जलमग्न हो गया था।

बीती 25 फरवरी को प्रधानमंत्री ने समुद्र के अंदर जाकर जलमग्न द्वारका जी के दर्शन किए थे। वर्ष 2024 की दिवाली से द्वारका दर्शन के लिए सबमरीन से एक बार में 24 पर्यटकों को करीब 300 फीट पानी के नीचे सशुल्क ले जाने की योजना है।

घरेलू नुस्खा

पकी हुई इमली का गूदा निकाल कर हथेलियों और तलवों पर मलने से लू के असर में कमी होती है।

आओ संस्कृत सीखें-40

- **मैं विमान से जाऊँगा।**
  अहं विमानयायेन गमिष्यामि।

मोबाइल से नहीं, बच्चों को वास्तविक खेलों से जोड़िए

जीवन प्रबंधन गुरु पं. विजय शंकर मेहता का कहना है कि दुनिया में मोबाइल गेमिंग के मामले में भारतीय सबसे आगे हैं। इससे बच्चों का स्वयं पर से नियंत्रण चला जाता है और वे अवसाद, चिड़चिड़ापन के आदी हो जाते हैं। यह केवल एक कोरा आश्वासन है कि सीमित समय में अगर मोबाइल पर गेमिंग की जाए तो फायदेमंद है। अत: अपने बच्चों को वास्तविक खेलों से जोड़िए, जिसमें दृश्य सजीव हों और पूरा शरीर सक्रिय रहे। पहले के समय के खेल आज बहुत जरूरी है, वरना यह छोटा सा खिलौना ऐसे खेल खेलेगा कि कई पीढ़ियां उसकी कीमत चुकाएंगी।

कुकिंग / किचन टिप्स

पूरी या पकौड़े तलते समय तेल में चुटकी भर नमक डालें, इससे पूरी या पकौड़े कम तेल सोखेंगे और तेल की भी बचत होगी।

दिवस

कारगिल दिवस : जम्मू-कश्मीर स्थित कारगिल पहाड़ियों को पाकिस्तानी घुसपैठियों के चंगुल से 'ऑपरेशन विजय' चलाकर मुक्त कराया गया। अधिकारिक रूप से यह युद्ध 26 जुलाई को समाप्त हुआ तभी से प्रत्येक वर्ष यह दिवस 26 जुलाई को मनाया जाता है। 60 दिन चले इस युद्ध में 550 जवानों ने अपना बलिदान देकर भारत माता का गौरव बढ़ाया था।

गीता- दर्शन

शाक्नोतीहैव य: सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात्।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्त: स सुखी नर:।।

श्रीकृष्ण कहते हैं, हे अर्जुन! जो साधक इस मनुष्य शरीर का नाश होने से पहले ही काम-क्रोध से उत्पन्न होने वाले वेग को सहन करने में समर्थ हो जाता है, वही पुरुष योगी है और वही सुखी है। (5/23)

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें- **सामान्य**- यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ** - यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम**- यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. भारत ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल की आपूर्ति किस देश को कर रहा है?
2. भारत में सबसे अधिक वन संपदा किस प्रदेश में है?
3. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का पहला उपग्रह कौन सा था?
4. संविधान का अनुच्छेद 370 किस राज्य के लिए लागू था?
5. भारतीय मूल की पहली महिला अंतरिक्ष यात्री कौन थी?
6. सौर मण्डल में सबसे गर्म ग्रह का नाम क्या है?
7. भारत में पाँच नदियों की भूमि वाला राज्य कौन सा है?
8. दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म किस स्थान पर हुआ था?
9. अरुणालच प्रदेश के किस जिले में 'परशुराम कुंड' स्थित है?
10. तराईन युद्ध का मैदान किस राज्य में स्थित है?

उत्तर इसी अंक में...

बोधकथा

सार्थक जीवन

एक बार महाराजा विक्रमादित्य अपने गुरु के दर्शन करने उनके आश्रम पहुँचे। वहां उन्होंने गुरु से कहा, 'गुरुजी! मुझे कोई मंत्र दीजिए जिससे न केवल मुझे बल्कि मेरे उत्तराधिकारियों को भी मार्गदर्शन मिलता रहे।'

गुरुजी ने उन्हें एक मंत्र लिखकर दिया जिसका अर्थ था कि मनुष्य का दिन व्यतीत हो जाने के बाद यह अवश्य चिंतन करना चाहिए कि आज का मेरा दिन पशु की तरह गुजरा या सत्कर्म करते हुए।

इस मंत्र का राजा विक्रमादित्य पर इतना असर पड़ा कि उन्होंने इसे अपने सिंहासन के सामने अंकित करवा दिया। अब वह रोज रात को यह विचार करते कि उनका दिन अच्छे काम में बीता या नहीं।

एक दिन अति व्यस्तता के कारण वह किसी की मदद अथवा परोपकार का कार्य नहीं कर पाए। रात को सोते समय दिन के कामों का स्मरण करने पर उन्हें याद आया कि आज उनके हाथ से कोई सद्कार्य नहीं हो पाया। वह बैचेन हो उठे। उन्होंने सोने की कोशिश की पर उन्हें नींद नहीं आई।

आखिरकार वह उठकर बाहर निकल गए। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक आदमी सर्दी से ठिठुर रहा था। उन्होंने उसे अपना शॉल ओढ़ाया और राजमहल में लाकर सेवा की। अब उन्हें इस बात का एहसास हुआ कि उनका दिन अच्छा बीता।

यदि प्रत्येक व्यक्ति सद्भावना व परोपकार को अपनी दिनचर्या में शामिल कर ले तो उसका जीवन सार्थक हो जाता है।

वर्ग पहेली

समुद्र मंथन में निकले 14 रत्नों को खोजिए

क	ल्प	वृ	क्ष	मा	रं	भा	ऐ
दे	वी	ल	क्ष्मी	च	क्र	र्या	रा
क	णी	ह	कौ	न्द्र	ये	न	व
दा	रू	ला	स्तु	मा	अ	मृ	त
त	वा	ह	भ	ता	ज	ता	जा
का	म	धे	नु	ध	न्व	त	रि
ग	दि	श्री	उ	च्चै	श्र	वा	पा
ज	रा	पाँ	च	ज	न्य	त	री

उत्तर : हलाहल, अमृत, कामधेनु, उच्चैश्रवा, ऐरावत, कौस्तुभ, कल्पवृक्ष, रंभा, देवीलक्ष्मी, वारूणी, चन्द्रमा, पारिजात, पाँचजन्य,धन्वन्तरि

बाल प्रश्नोत्तरी - 58

जीतें पुरस्कार अब दूसरी और तीसरी बार भी

बाल मित्रों, 16 मई का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 7976582011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 को प्रमाण–पत्र तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल–किशोर ही भाग ले सकते हैं। लगातार 5 बार उत्तर सही पाए जाने पर विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। उत्तर भेजने की अंतिम तिथि – **20 जुलाई, 2024**

1. महाराजा दशरथ के साथ युद्ध में जाने वाली रानी कौन थीं?
(क) सुमित्रा (ख) कौशल्या (ग) कैकेयी (घ) तारा

2. महाराष्ट्र सरकार ने वर्ष 2023 में अहमद नगर का नाम बदल कर क्या रखा है?
(क) अहिल्या नगर (ख) अकोला नगर (ग) अंजनवेल (घ) अंबाजोगाई

3. इंदौर की वह शासिका कौन थीं जिन्हें 'पुण्यश्लोक' की उपाधि से नवाजा गया?
(क) उषादेवी होल्कर (ख) अहिल्याबाई (ग) रानी दुर्गावती (घ) अवंतीबाई

4. बम्बई बंदरगाह से वीर सावरकर किस जहाज से लंदन के लिए रवाना हुए?
(क) परसिया (ख) रेड ड्रेगन (ग) सुसान (घ)वोल्टर्नो

5. फ्री इंडिया सोसायटी का गठन करने वाले क्रांतिकारी कौन थे?
(क) भगत सिंह (ख) राजगुरु (ग) वीर सावरकर (घ) श्यामजी कृष्ण वर्मा

6. घोटिया आम्बा तीर्थ राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(क) जोधपुर (ख) बांसवाड़ा (ग) बीकानेर (घ) उदयपुर

7. 'एकात्म मानव दर्शन' का विचार पं. दीनदयाल जी ने किस स्थान पर दिया था?
(क) दिल्ली (ख) कोलकाता (ग) राजस्थान (घ) मुम्बई

8. संघ के सेवा विभाग द्वारा नारायण दर्शन यात्रा की शुरुआत कब की गई थी?
(क) वर्ष 2021 (ख) वर्ष 2015 (ग) वर्ष 2017 (घ) वर्ष 2019

9. महासती अनसूइया का मंदिर उत्तराखण्ड के किस जिले में स्थित है?
(क) चमोली (ख) बागेश्वर (ग) चंपावत (घ) पिथौरागढ़

10. जूना अखाड़ा के वर्तमान पीठाधीश्वर का नाम बताइए?
(क) महंत प्रेमगिरी (ख) अवधेशानंदगिरी(ग) महंत नारायणगिरी (घ) वैभवगिरी

समीकरण हल कीजिए

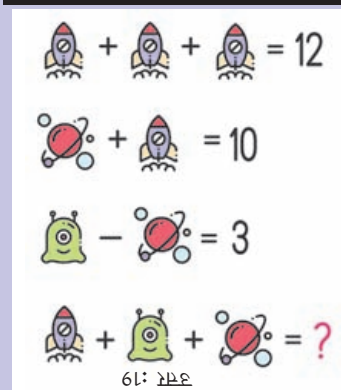

उत्तर: 19

बाल प्रश्नोत्तरी-56 के परिणाम

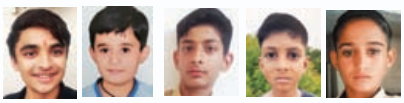

कार्तिक पुष्कल सुदर्शन रियांश अशोक

1. कार्तिक सिंह, तलवंडी, कोटा
2. पुष्कल, सांगरिया, जोधपुर
3. सुदर्शन गोदारा, दांतानगर, नागौर
4. रियांश मेघवंशी फागी, दूदू
5. अशोक चौधरी, डाणियों का बास, जोधपुर
6. राघव शर्मा, आजाद मौहल्ला, भीलवाड़ा
7. मिली सिंह, आदर्श नगर, अजमेर
8. अवनी रांकावत, ब्रह्मपुरी, नागौर
9. गार्गी शर्मा, वाटिका रोड, जयपुर
10. आदित्य सैनी, नान्ता, कोटा

सही उत्तर
1. (ख)
2. (क)
3. (क)
4. (ग)
5. (ख)
6. (क)
7. (क)
8. (क)
9. (ख)
10.(घ)

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी – 58)
(अपनी पासपोर्ट फोटो अवश्य वॉट्सएप करें)

1.( ) 2.( )3.( )4.( ) 5.( )6. ( )7.( )8.( ) 9.( )10.( )

नाम.......................................कक्षा.........पिता का नाम....................................

उम्र........... पूर्ण पता..

..........................पिन.................मोबाइल...

गुरु पूर्णिमा

हमारे सनातन धर्म में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान है। गुरु कौन? गुरु वह जो हमारे जीवन से अज्ञानरूपी अंधकार को दूर करें। अपने कल्याण के इच्छुक व्यक्ति को ऐसे ही सद्गुरु की आवश्यकता होती है जिसके मार्गदर्शन से व्यक्ति अपने जीवन में परम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। गुरु पूजा के द्वारा व्यक्ति के जीवन में त्याग व समर्पण का भाव पैदा होता है।

संघ के 6 वार्षिक उत्सवों में से गुरु पूर्णिमा भी एक उत्सव है। गुरु पूर्णिमा का पर्व हर वर्ष आषाढ़ माह की पूर्णिमा (इस बार 21 जुलाई) के दिन मनाया जाता है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गुरु के स्थान पर परम पवित्र भगवा ध्वज को स्थापित किया है। भगवा ध्वज त्याग व समर्पण का प्रतीक है। भगवा ध्वज की पूजा यानि गुरु पूजा यानी त्याग व समर्पण जैसे गुणों को अपने जीवन में उतारते हुए समाज की सेवा करना।

हर वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा को व्यक्तिश: संघ शाखाओं पर गुरु पूजा अर्थात् भगवा ध्वज पूजन का कार्यक्रम स्वयंसेवकों द्वारा रखा जाता है। संघ शाखा पर उपस्थित होकर प्रत्येक स्वयंसेवक भगवा ध्वज के समक्ष राष्ट्र की सर्वांगीण समृद्धि का संकल्प लेता है।

इसी दिन महाभारत के रचयिता महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास का जन्म हुआ था। वे संस्कृत के महान विद्वान थे। वेदों को वर्गीकृत करने के कारण उनका नाम वेद व्यास पड़ा था। वेद व्यास जी को आदि गुरु भी कहा जाता है। इसलिए गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है।

उत्तर जांचें कि आप कितने ज्ञानवान है? 1. फिलीपींस 2. मध्यप्रदेश 3. आर्यभट्ट 4. जम्मू-कश्मीर 5. कल्पना चावला 6. शुक्र ग्रह 7. पंजाब 8. पटना 9. लोहित 10. हरियाणा

आगामी पक्ष के विशेष अवसर (16 से 31 जुलाई, 2024)
(आषाढ़ शु. 10 से श्रावण कृ.11 तक)

जन्म दिवस

आषाढ़ शु. 10(16 जुलाई)- जिनदत्त सूरी जयंती
23 जुलाई (1856) - लोकमान्य तिलक जयंती
23 जुलाई (1906) - चन्द्रशेखर आजाद जयंती
श्रावण कृ.9(29 जुलाई) - 8वें गुरु हरकिशन जयंती
31 जुलाई (1880) - मुंशी प्रेमचन्द जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

20 जुलाई (1965)- बटुकेश्वर दत्त की पुण्यतिथि
24 जुलाई (1824)- कुंवर चैन सिंह का बलिदान
26 जुलाई (1972)- बाबा साहब आप्टे की पुण्यतिथि
27 जुलाई(1939) - हैदराबाद सत्याग्रह में शांतिप्रकाश का बलिदान
27 जुलाई (2015)- डॉ.एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि
31 जुलाई (1940)- सरदार उधम सिंह का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

आषाढ़ शु. 11 (17 जुलाई)- पंढ़रपुर यात्रा प्रारंभ (महाराष्ट्र)
26 जुलाई (1999)- कारगिल विजय दिवस

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

आषाढ़ पूर्णिमा (21 जुलाई)- व्यास (गुरु) पूर्णिमा

पंचांग- आषाढ़ (शुक्ल पक्ष)
06 से 21 जुलाई, 2024 तक

गुप्त नवरात्र-6-15 जुलाई, **विनायक चतुर्थी व्रत**- 9 जुलाई, **स्कन्ध पंचमी**- 11 जुलाई, **अष्टानिका महापर्व (जैन)**-14-21 जुलाई, **भड़ल्या नवमी**- 15 जुलाई, **देवशयनी एकादशी व्रत**- 17 जुलाई, **चातुर्मास व्रत प्रारंभ**- 17 जुलाई, **प्रदोष व्रत**- 19 जुलाई, **चांद पूर्णिमा व्रत**- 20 जुलाई, **चौमासी चौदस (जैन)** - 20 जुलाई, **सत्यनारायण व्रत (गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा)**-21 जुलाई, **चातुर्मास (संन्यासियों) प्रारंभ**- 21 जुलाई

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 6 जुलाई को **मिथुन** राशि में, 7 से 9 जुलाई **स्वराशि** कर्क में, 10-11 जुलाई को **सिंह** राशि में, 12 से 14 जुलाई **कन्या** राशि में, 15-16 जुलाई को **तुला** राशि में, 17-18 जुलाई को नीच की राशि **वृश्चिक** में तथा 19 से 21 जुलाई तक धनु राशि में गोचर करेंगे।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष में **गुरु** व वक्री **शनि** यथावत वृष व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** व **केतु** भी क्रमश: मीन व कन्या राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** 16 जुलाई को प्रात: 11:19 बजे मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश करेंगे। **मंगल** 12 जुलाई को सायं 6:58 बजे मेष व वृष राशि में प्रवेश करेंगे। **बुध** 19 जुलाई को रात 8:46 बजे कर्क से सिंह राशि में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 6 जुलाई को प्रात: 4:31 बजे मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश करेंगे।

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

डबल इंजन सरकार का संकल्प

मोदी की गारंटी हो रही साकार

अलौकिक धाम श्री राम मंदिर अयोध्या

- जयपुर से अयोध्या के लिए विशेष विमान सेवा प्रारम्भ
- 3000 वरिष्ठ नागरिकों को निःशुल्क यात्रा कराई जाएगी
- राजस्थान के सात संभाग मुख्यालयों से अयोध्या के लिए बस सेवा प्रारम्भ

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

पाक्षिक
पाथेय कण
(01-15 जुलाई,2024)
(26 जून को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY 202/2024-26

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/WPP 01/2024-26

RAS- 2021 में 750+ Selections

Springboard ACADEMY
AN INSTITUTE FOR IAS & RAS

Offline & Online Exclusive Live Batch from Classroom

IAS/RAS
3 Years Integrated Course After 12th Pass
11 जून से बैच प्रारम्भ

RAS
Foundation Batch
11 जून से बैच प्रारम्भ

IAS
Foundation Batch
4 जून से बैच प्रारम्भ

RAS Pre/ PSI
नया बैच प्रारम्भ

Riddhi - Siddhi, Gopalpura Bypass, Jaipur
9636977490, 0141-3555948

ऐप डाउनलोड करने के लिए
QR Code स्कैन करें
GET IT ON Google Play

Connect with us- Springboard Academy Online Springboard Academy Jaipur

स्प्रिंगबोर्ड एकेडमी के IAS, RAS हेतु प्रमाणित क्लास नोट्स उपलब्ध The Notes Hub 7610010054, 7300134518

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक माणकचन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी, ए-10, 22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालय : पाथेय भवन, 4 मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक- रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 जुलाई, 2024 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,

_____

_____

_____